Lecture - 135.

# अखिल भारतीय सेवा पर निबंध

- ममता रानी
- अतिथि सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
एल० एन० एस० आर० के०
एस० कॉलेज, सहरसा

बी० ए० पार्ट - 3rd
पेपर - सामान्य अध्ययन


Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

भारत में प्रशासनिक व्यवस्था का मुख्य आधार लोक सेवक होते हैं और यह प्राचीन काल से ही भारत में व्याप्त है। मौर्य काल में समाहर्ता नामक अधिकारी वर्तमान के जिलाधिकारी के समान था। इसी प्रकार से मध्य काल में मुगल प्रशासन के अन्तर्गत अमलगुजार और फौजदार जिला स्तर के अधिकारी थे। विकास के क्रम में ब्रिटिश प्रशासन के अन्तर्गत अखिल भारतीय स्तर के सेवा का सबसे अधिक विकास हुआ जिसको विभिन्न चरणों में बाँट कर अध्ययन किया जा सकता है-

लार्ड डलहौजी के समय 1853 का अधिनियम पारित किया गया जिसके पहली बार भारत में प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर नियुक्ति की प्रक्रिया को अपनाया गया। और इसके लिए 1854 में लोकसेवा विभाग की स्थापना भी किया गया। हम लोग यह भी जानते हैं कि भारत में लोक सेवा और सिविल सेवा का जनक लार्ड कार्नवालिस था। अर्थात अंग्रेजों ने अपने लोक सेवा के लिए इस प्रकार ... पद का सृजन किया क्योंकि अंग्रेजों का सबसे अधिक ध्यान राजस्व पर था क्योंकि उनकी भारी ... भारत की आय पर टीका हुआ था जिसका विकास 1919 के एक्ट में दिखाई पड़ता है)

विकास के क्रम में अपने इस ... 1919 में भारत में पहली बार 1919 अधिनियम में इसको और विस्तारित किया गया और इसके लिए एक्ट के उत्तरदायी सरकार की स्थापना किया गया और सेवा का गठन भी कर दिया गया 9 प्रकार के अखिल भारतीय स्तर जिसमें प्रशासन, चिकित्सा, अभियंता आदि प्रमुख था।

प्रशासन को और अधिक सुविधा जनक बनाया ली आयोग का गठन किया गया और इसने भी अपने इसके लिए ली आयोग भारतीय सेवा में कटौती करते हुए रिपोर्ट प्रस्तुत किया उसके अखिल भारतीय सेवा की सिफारिश किया। इन लोगों ने 9 सेवा के स्थान पर 2 सेवा की ... नियुक्ति के लिए 1926 ई० में ब्रिटिश सरकार ने संघ लोक सेवा आयोग का स्थापना किया और सम्पूर्ण जिम्मेदारी इस आयोग को सौंप दिया गया। सम्पूर्ण भारतीय क्षेत्र में चूंकि इस स्तर के अधिकारी की नियुक्ति किया जाता था इस लिए संघ लोक सेवा आयोग को केन्द्रीय


Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

न स्थान स्तर द्वारा संवैधानिक दर्जा दिया गया।

1919 के एक्ट के द्वारा ही भारत में द्वैध शासन में यह सेवा निरंतर सामने आया। जिसका विस्तार 1935 के एक्ट में किया गया। इस एक्ट के द्वारा अधिकार क्षेत्र में वृद्धि किया गया और केन्द्र के प्रति पूर्ण रूप से उत्तरदायी बनाया गया लेकिन 1939 में जब द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आदि का सामना अखिल भारतीय सेवा के लिए चुनौती के रूप में निकल कर सामने आया।

द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों ने अंग्रेजी सरकार का समर्थन नहीं किया था। परिणाम स्वरूप युद्ध की समाप्ति के बाद भारत की समस्या को सुलझाने के लिए 1946 में कैबिनेट मिशन को भारत भेजा गया और इस मिशन ने अंतरिम सरकार का प्रस्ताव किया इसे कांग्रेस ने मान लिया। P. J. Nehru के नेतृत्व में 1946 में अंतरिम सरकार का गठन किया गया और 1947 में अपना देश स्वतंत्र हुआ।

स्वतंत्रता के ~~बाद~~ जब भारत से पाक अलग हुआ तब (समय) उच्च स्तर की अधिकारियों की समस्या बहुत अधिक जटिल हो गई क्योंकि लगभग 1000 अधिकारियों में से 100 अधिकारी पाकिस्तान चले गए जिससे भारत की प्रशासनिक समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया क्योंकि विभाजन के बाद केवल गृह नीति नहीं बल्कि विदेश नीति के रखरखाव के लिए भी अधिकारियों की जरूरत महसूस किया गया था। इस समस्या से निपटने के लिए तात्कालिक गृह मंत्री पटेल ने भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा नामक दो अखिल भारतीय सेवा का सृजन किया जिसने समस्याओं का निराकरण करने में सहयोग प्राप्त हुआ।

आजादी के बाद भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आर्थिक विकास की समस्या कृषि में सुधार आदि के लिए पूर्ण रूप से कार्य करने की आवश्यकता के लिए सरकार ने पहल शुरू किया और इन कुशल अधिकारियों के कार्य ~~शैली~~ शैली पर ही आधारित था विकास के इसी क्रम में 1966 में भारतीय वन सेवा नामक तीसरे ~~अखिल~~ अखिल सेवा का गठन किया गया।

इस प्रकार प्राचीन काल का मध्य काल और ब्रिटिश काल में अखिल भारतीय स्तर के अधिकारियों ने प्रशासन के क्षेत्र में सराहनीय महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। वर्तमान में विकास के साथ अलगाववादी कार्य और आतंकवाद, भ्रष्टाचार, आंतरिक और नक्सलवाद के निपटने


Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

Q. अखिल भारतीय सेवा ने अपनी उपयोगिता खो दिया है। क्या इसे समाप्त कर देना चाहिए?

Q अखिल भारतीय सेवा पर संक्षिप्त रूप में निबंध लिखें।
विकास के क्रम में अखिल भारतीय सेवा का उल्लेख कीजिए।

अखिल भारतीय सेवा

प्रथम चरण
(1853-1919) के काल

* मौर्य काल में समाहर्त्ता मुगल काल में अमल-गुजार + फौजदार
* अंग्रेजो के काल में सार्वभौमिक विकास
* 1853 के एक्ट के द्वारा 1854 में लोक सेवा विभाग की स्थापना जिसका विस्तार 1919 के एक्ट

2nd चरण
(1919-1935)
के काल, 1919 एक्ट में विस्तार और 9 सेवा को अखिल भारतीय सेवा का दर्जा - जैसे - चिकित्सा, प्रशासन, अभियंत्रण आदि
* ली कमिशन का गठन इसने 9 के बदले 6 सेवा को मानने की अनुशंसा किया और इसी के परिणाम स्वरूप 1926 में U.P.S.C की स्थापना किया गया।

3rd चरण
(1935-1944) के काल
* 1935 के एक्ट में पूर्ण विस्तार
* 2nd WW के कारण संकट का काल

4th चरण (1944-1950) का काल
* 2 WW के समाप्ति के बाद कैबिनेट मिशन को भेजा गया
* नेहरू के नेतृत्व में अंतरिम सरकार का गठन लेकिन स्वतंत्रता के बाद पाक विभाजन के बाद बहुत अधिक समस्या का जन्म जैसे - 1000 I.A.S में 600 pak चले गए।
* सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इसलिए I.A.S, I.P.S के पद का सृजन किया।

5th चरण (1950 में) अब तक
* 1966 में I.F.S. पद का सृजन
* वर्तमान में यह तीनो सार्वभौमिक त्रिवर्ग महत्वपूर्ण पद बना हुआ है इसलिए इसको समाप्त नहीं किया जा सकता है। लेकिन इसके कमियों में सुधार कर और मजबूत बनाने की जरूरत है

के रूप में भी यह अधिकारी वर्ग भोगवाद का रहा है। लेकिन आदर्श में हम यह कह सकते हैं कि भारतीय प्रशासक की छवि के रूप में अखिल भारतीय सेवा अपनी भूमिका निभा रहा है। इसके बगैर भारतीय प्रशासन की कल्पना नहीं की जा सकती है। अतः हम कह सकते हैं कि यह सेवा आज भी प्रासंगिक है लेकिन इसको समाप्त नहीं किया जा सकता बल्कि इसमें सुधार लाते हुए और मजबूत बनाने की जरूरत है।